(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. I, Jan-Mar **ISSN: 2249-4642**

EXPRESSION OF POETIC BEAUTY INHERENT IN INDIAN EPICS

Dr. Neeraj Kumari
Associate Professor, Sanskrit Department
Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

भारतीय महाकाव्यों में निहित संस्कृत काव्य सौंदर्य की अभिव्यक्ति

डॉ नीरज कुमारी
सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

IJRSSH

ABSTRACT

Acharya Ramakant Shukla in Sanskrit poetry named 'Bhati me Bharatam' also used to sing the praise of literature and philosophy and has published various points of view. The epic 'Ramayana' of our country, which is the basis of Indian culture, has been transformed into many forms- such as Moolramayana, Pampramayana, Jainramayana, Krittivasramayana, Divyramayana, Lokramayana, Bhushundiramayana, Adbhutramayana, Bhavarthramayana etc. If this epic in the form of Ramayana had not been composed, then certainly India would not have been such a cultural India. The entire essence of the country's culture and tradition lies in this literature.

सारांश

*आचार्य रमाकान्त शुक्ल ने **'भाति मे भारतम्'** नामक संस्कृत काव्य में भी साहित्यिक गौरव का गान करते हुए उसके आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चिन्तन विषयक बिन्दुओं को प्रकट किया है। हमारे देश का आदिकाव्य **'रामायण'** जो भारतीय संस्कृति का आधार है, अनेक रूपों में रूपान्तरित हुआ है, यथा–**मूलरामायण, पम्परामायण, कम्बुरामायण, जैनरामायण, कृत्तिवासरामायण, दिव्यरामायण, लोकरामायण, भुशुण्डिरामायण, अद्भुतरामायण, भावार्थरामायण** इत्यादि। यदि यह रामायण रूपी महाकाव्य रचा न गया होता तो निश्चय ही भारत देश ऐसा सांस्कृतिक भारत देश न होता। देश की संस्कृति एवं परम्परा का सम्पूर्ण सार इस साहित्य में निहित है। इसी प्रकार **योगवासिष्ठ, श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत** तथा भारत के अन्य श्रेष्ठ ग्रन्थ तथा **'रामचरितमानस'**, कबीरदास कृत **'बीजक'** तथा सूरदास कृत **'सूरसागर'** इत्यादि भी इसी देश की सांस्कृतिक सम्पदा रक्षण हेतु रचे गए। अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाये रखने वाले तथा सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करने वाले ऐसे श्रेष्ठ साहित्य का संरक्षण एवं संवर्धन अत्यावश्यक है। इसी बात को गीत के माध्यम से इस प्रकार कहा गया है–*

मूलरामायणं पम्परामायणं
कम्बरामायणं जैनरामायणम्।
कृत्तिवासादिरामायणं श्रावयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।
एवं
योगवासिष्ठगीतामहाभारतै–

गृन्थरत्नैश्च तैस्तैः प्रबुद्धं तथा।
मानसं बीजकं सूरसिन्धुं दधद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।

*उसी प्रकार भारतीय संस्कृत वाङ्मय वेदत्रयी, सांख्य दर्शन, योग दर्शन ने विविध धर्मों यथा–**शैव धर्म, वैष्णव धर्म, शाक्तधर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म, ईसाई धर्म, मुस्लिम धर्म तथा सूफीमत** इत्यादि का उदय कर लोगों को जीवन जीने एवं एकता का सूत्र बाँधे रखने की प्रेरणा दी है एवं मानवीय गुण जैसे शील, संतोष, संयम तथा सत्य आदि उदार वृत्तियों से जिस संस्कृति की रक्षा होती है ऐसे भारतीय साहित्य के प्रति निश्चय ही पाठकों का मन श्रद्धा व अनुराग से भर जाना चाहिए। ऐसे साहित्य की रक्षा हेतु भारत के प्रत्येक घर में उसकी पूजा होनी चाहिए।*

परिचय

जहाँ के ऋषियों ने सदैव दर्शन, ज्ञान और चरित्र के द्वारा मोक्ष का मार्ग बताया है। जहाँ क्रिया के अभाव में ज्ञान एक बोझ ही माना गया है अर्थात् जो ज्ञान किसी भी कार्य की सिद्धि न करे ऐसे ज्ञान का कोई औचित्य नहीं। ऐसे न जाने कितने रोमांचकारी तथ्य इस भारतीय साहित्य में निहित हैं। सत्य ही हम बहुसौभाग्यशाली हैं, जो इस देश के वासी हैं और उस साहित्य के प्रति भी अत्यन्त कृतज्ञ हैं, जिसने मानव को मानव बनने की प्रेरणा दी है। इस तथ्य को इस गीत के द्वारा बताया गया है–

यत्त्रयीसांख्ययोगादिमार्गैर्युतं
जीवनं मुक्तमाकर्तुमाकांक्षति।
शीलसन्तोषसत्यादिभी रक्षितं
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।।
एवं
दर्शनज्ञानचारित्र्यसम्मेलनं
यत्र मोक्षस्य मार्गं भणन्त्यागमाः।
ज्ञानमास्ते च भारः क्रियां वै विना
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।।

*आज के इस भौतिकतावादी युग में मानव जीवन इतना असहज हो गया है कि मनुष्य जीवन को जीवन न समझकर भार समझता है। अतः साहित्य का यह महत्त्वपूर्ण दायित्व है कि व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी समस्या से विचलित न होकर सद्बुद्धि से जीवन व्यतीत करे। इस प्रकार जीवन की दार्शनिकता पर प्रकाश डालते हुए आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी कृत **'गीतधीवरम्'** नामक रागकाव्य में शरीर रूपी नौका पर आरूढ़, जीवन सागर के कष्टों से जूझता हुआ सद्बुद्धि पुरुष (धीवर) की मनोदशाओं का वर्णन हुआ है। इसमें वर्णित धीवर का व्यक्तित्व सागर के समान गहरा है। वह जीवनरूपी नौका को सन्मार्ग की ओर चलाने हेतु स्वयं को सावधान रखकर प्रेरित करता है, ताकि मार्ग से विचलित न हो जाए। धीवर इस नश्वर संसार*

IJRSSH

(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. I, Jan-Mar **ISSN: 2249-4642**

में सहायता हेतु मुखापेक्षी न होकर अपने बाहुवल और पुरुषार्थ पर विश्वास करता है, जैसा कि इस गीत में अवेक्षणीय है–

धीवर, नश्वरमस्ति समस्तम्
इयं क्षेपणी तव भुजदण्डो
पारावारसमुत्था लहरी
तव नौकेयं सदा सहाया
झञ्झाभिः सङ्घर्षकरी
केवलमेतत् सत्यम्।।

जीवन की कष्टमय दशा में ही व्यक्ति के धैर्य, विवेक, साहस एवं गम्भरता आदि गुणों की परीक्षा होती है। वीर, ज्ञानी और संकल्पयुक्त व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति होने पर भी प्रसन्नचित्त्स होकर अपने कर्म में संलग्न रहते हैं, जैसा कि आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने इस गीत में वर्णन किया है।

वहतु झंझा चलतु प्रभंजनो वा
ज्वलतु वौर्वो रुणद्धु सकलो जनो वा
सुसिथरोऽहं, क्षणभङ्गुरेस्मिन् खिले
न कमलालये कमलाननौ न कमले
धीवरोऽहं जीवनं मदीयं जले।
क्षप्यते वयो गलत्यनुपमं रूपं
विपरिवर्तते समयेन स्वरूपम्
चरति नक्रे पुरापतति तिमिङ्गिले
न परावर्तने विरमणे विकले
धीवरोऽहं जीवनं मदीयं जले।

कवि का मनोबल अत्यन्त शक्तिशाली है। वह जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियों के होने पर भी धैर्य, विवेक और साहस का परित्याग नहीं करता।

कवि ने एक ऐसे उदात्त व्यक्तित्व से युक्त का व्यक्ति का वर्णन किया है जो कि अनेकानेक बाधाओं के आपने पर भी विचलित नहीं होता, उसका आत्मविश्वास सदैव बना रहता है–

गगनं भवतु तमिस्राग्रस्तं
सवितोदेतु यातु वा अस्तं
झञ्झा हरतु वहतु वा वासम्
तदपि न मुंचात्मनि विश्वासम्।

निराशा में भी आशा छिपी रहती है। इसी आशारूपी मनोबल से व्यक्ति अपनी जीवनरूपी नौका को खेता चला जा रहा है। यही भाव निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है–

IJRSSH

दुरन्तदुःस्वप्नमयी मरीचिका
तथा हताशाजनिता तमिस्रा
मध्येऽनयोरात्मनि चात्मनैव
प्रकाशितेयं कापि च दीपवर्तिका।।

जीवन संघर्ष में अनेक बाधाओं से पीड़ित होने पर भी श्रेष्ठव्यक्ति दीनता को स्वीकार नहीं करता। दीनता हमारे अन्तःकरण के प्रकाश को ढँके रखती है। जिसके कारण हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व सामने नहीं आ पाता। आत्मविश्वास के लिए दैन्य भाव का त्याग अत्यावश्यक है जैसा कि इन पंक्तियों में दृष्टिगोचर हो रहा है–

प्रसरति तमस्तोम एषोऽयं यदपिच्छन्नाकाशः
कृन्तति किन्तु तवायमथैनमन्तर्दीपप्रकाशः।
दैन्यविहीन
स्व विस्तारय
सदृढ़ं मनोवितानम्।

कवि के अन्तर्मन में चलने वाले संकल्प–विकल्पों का सुन्दर निदर्शन गीतकार ने प्रस्तुत किया है। व्यक्ति की आंतरिक वेदना को प्रस्तुत करने वाली ये पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

याति देहोऽग्रतः शीर्यते चेतना
चेतनायां च मे जीर्यते कामना।
कामनायां विचारा विकल्पायितास्ते
विकल्पा विकीर्णा महासागरे।।

जिस प्रकार सूर्य की गति उत्तरायण से दक्षिणायन की ओर जाती है, उसी प्रकार धीवर भी उसी दिशा में अपनी नाव को बढ़ा रहा है। ग्रीष्म की अधिकता है। कुण्ठा, निराशा और विषाद से युक्त अन्तर्मन किसी आकस्मिक परिवर्तन की प्रतीक्षा में हैं कि दक्षिण की ओर जाते हुए शीतल मन्द समीर चलने लगे। धीवर थकावट को मिटाकर शान्ति का अनुभव करे, ऐसा वर्णन प्रस्तुत गीत में दर्शित हो रहा है–

उत्तरायणमिदं कथं ते
स्वयं तु दक्षिणायताम्
क्षपय कालं कथमपीह धीवर
ग्रीष्मो हि भीष्मायते।।

जीवन की अवस्था में प्रौढ़ता की ओर बढ़ते हुए कवि के अंतर्मन में वैराग्य का उदय हो रहा है। वह सांसारिक भोगों में लिप्त न होकर स्वयं को वासना–मुक्त करना चाहता है:–

IJRSSH

हीयते गमनवेला वेलां च पश्यसि कथम्
किं चिरायसेऽस्मिंस्तटे कथम्?
नौकेयमुत्कायते वीचिभिः सङ्घट्टितुं
त्वं तटे दुर्मनायसे सङ्कुचसि गन्तुम्
लहरीचयं कुरु क्षेपणी–समुट्टङ्कितम्।।

'गीतधीवरम्' *में वर्णित धीवर प्रेम बन्धन को वास्तविक एवं स्थायी बन्धन नहीं मानता। उसके मतानुसार प्रेम एक बाधा है। प्रियजनों से विछोह होने पर प्रेम अत्यन्त कष्टप्रद होता है। अंतिम समय आने पर कोई सहचर अथवा सहचरी साथ नहीं होता। इसलिए मैं यहीं स्थिर रहना चाहता हूँ–*

मा स्थापय नावं तीरेऽस्मिन्
मा बधान च रतिं यस्मिंस्तस्मिन्।
चलतु नौका सरति पवने
किंचिरायसे त्वमितो गमने
त्रोटय बन्धं भावय मुक्तिम्
स्थापितेह तटे क्षेष्यतीयम्
तरङ् गघातैर्न विनङ्क्ष्यतीयम्
जय रे मृत्यु क्षण एकस्मिन्
नो कमलिनी नो वा जनास्ते
नापि कोऽपि ते सहचर आस्ते
बद्धा सक्तिस्तव रे कस्मिन्।।

धीवर हर प्रकार के मानसिक संताप से मुक्त होना चाहता है। वह स्वयं को ही सम्बोधित करते हुए कहता है कि–

उद्धरधीवरमनसःक्लेशादात्मनैव चात्मानम्।

नाना प्रकार के अंधविश्वासों, बाह्याडम्बरों को देखकर तथा उनमें फँसे हुए और दिग्भ्रमित जनों को लक्ष्य करके कवि कहता है कि–

अनन्तः शेते सागरे
भ्रान्ता वयं तु मरुनगरे।
रसो वैसोऽन्तर्विद्यते
चेतो बहिः किं खिद्यते
चाकचक्ये प्रसृमरे
भ्रान्ता वयं मरुनगरे।

कवि ने समसामयिक जीवन में उत्पन्न हलचलों, समस्याओं एवं परिस्थितियों का अध्ययन बड़ी गहनता के साथ किया है। किस प्रकार सबल व्यक्ति दुर्बलों का शोषण

IJRSSH

(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. I, Jan-Mar **ISSN: 2249-4642**

करता है। कवि भलीभाँति परिचित है कि वैयक्तिक अभावों एवं सामाजिक कष्टों से पीड़ित व्यक्ति के आश्वासन एवं सहायता बहुत कम है–

आश्वासनं ग्रासइव लग्नं
दुर्नयबडिशे प्राज्यम्
जनतामीनं लोभयतीदं
प्रजातान्त्रिकं राज्यम्
विश्वासो रविरूपयात्यस्तम्।
एवं
त्रायते दुर्बलं मत्स्यमेनं लघुं
ग्रस्यमानं तु पीनेन मीनेन कः?
पश्यतो विप्लवं क्षुण्णपाथोनिधौ
मनसे धीवरस्य व्यथा जायते।।
एवं
क्रेतृविक्रेतृसम्मर्द आस्ते महान्
श्रूयते चैव कोलाहलोऽयुत्कटः।
नैवलग्नं मनः किन्तु दूरान्वितं
गाहते दुर्विगाह्यं क्वचित् सागरे।।

*किसी भी गीतकार की सफलता इसी में होती है किवह अपनी अन्तरवेदना को विश्वजनीन वेदना में बदल दे, अपने आन्तरिक अनुभवों को विश्व के पथ–प्रदर्शक बना दे। गीतकार का यही रूप हमें 'गीतधीवरम्' में देखने को मिलता है। **'गीतधीवरम्'** में वर्णित कवि की अन्तर्वेदना वास्तव में युगीन संत्रास है जिससे वही अकेला नहीं जूझता अपितु अन्य भी पीड़ितजन इसका अनुभव करते हैं, यथा–*

वेदना बोभूयतेऽस्मन् निखिलेऽपि भुवने।
सेतुमन्विष्यति सदैव मानव आजीवनं
प्रचीयते जीवनं विलीयते च बुद्बुदप्रभम्
सेतुर्नहि कोऽपि भवति तज्जलधौ
सेतूयतेऽत्र सुस्थिरं सा केवलमेव नौका।।

*भारतीय जीवन में **'संस्कारों'** का अत्यधिक महत्त्व है। जो मनुष्य को परिमार्जित करते हैं एवं प्रत्येक मानव के जीवन में अत्यन्त उपयोगी हैं, परन्तु कवि जब समाज में देखता है कि संस्कारों का ह्रास होता जा रहा है, व्यक्ति संस्कारों का तिरस्कार कर स्वयं को सर्वज्ञ मानकर जो कार्य करने योग्य नहीं हैं, उन्हें भी करता जा रहा है तब उसका हृदय वेदना से भर जाता है। आचार्य श्री निवास रथ द्वारा रचित गीत संकलन **'तदेव गगनं सैव धरा'** के **'नवजीवन–संस्कारमहत्त्वम्'** नामक गीति में नवीन भाव बोध के दर्शन होते हैं। गीत में जीवन की विभिन्न विषमताओं, विडम्बनाओं*

IJRSSH

(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. I, Jan-Mar **ISSN: 2249-4642**

और यंत्रणा का मार्मिक वर्णन हुआ है। संस्कारों की मानव–जीवन में जो उपयोगिता है, प्रस्तुत गीत में दर्शनीय है–

अहमपि जाने
जानीषे त्वम्।
नवजीवन संस्कारमहत्त्वम्।।
साधारण–जनता–नैतिकता
नैव दृश्यते तथा दूषिता।
निरुद्देश्य–विद्या–चतुराणां
यथार्थहीनं सर्वज्ञत्वम्।।
पिता विषीदति रोदिति माता
मदकता विषमा संजाता।
कुत्र गता शिक्षालय सेवा
नश्यति विद्याभ्यासगुरुत्वम्।।
अहमपि जाने।

संस्कृत भाषा न केवल भारत वर्ष की अपितु सम्पूर्ण विश्व की आदि भाषा है, इसे विद्वानों ने गीर्वाणवाणी कहा है। संस्कृत भाषा को लेकर व्यक्ति विशेष में भविष्य को लेकर प्रत्येक बुद्धिजीवी चिन्तित हैं। भारतवर्ष की इस थाती को पुनः व्यवहारिक भाषा बनाने के लिए प्रत्येक संस्कृतानुरागी प्रयत्नशील है।अर्वाचीन संस्कृत गीतकारों ने अपने–अपने संस्कृत गीतों के माध्यम से युवाओं को प्रेरित करने का प्रयास किया है। उनका सराहनीय प्रयास गीतों में इस प्रकार दिखाई दे रहा है–

*आचार्य श्रीनिवास रथ द्वारा रचित गीतसंकलन **'तदेव गगनं सैव धरा'** के **'जयति संस्कृत भारती'** नामक गीत में संस्कृत भाषा की वन्दना की गई है कि जो चारों दिशाओं से प्रकाशमान है, जो विभिन्न भाषाओं की जननी है, ऐसी माँ सरस्वती की वाणी की जय हो ! जो प्रत्येक स्थान पर सम्मानित है। चाहे वैदिक संस्कृत हो या लौकिक संस्कृत, वह पूर्णरूपेण मधुर है। संस्कृत भाषा विश्व मंगल की कामना का संदेश मुखरित करती है। ऐसी आर्य भाषा की जय हो। प्रस्तुत पद्य में संस्कृत भाषा की महत्ता को निरुपित किया गया है–*

पूर्व–पश्चिम–दक्षिणोत्तरदिग्वलय–लीलावती
भारतीय–विभिन्नवाङ्मय–तत्त्वसार–सरस्वती।
जयति संस्कृत भारती।।
विश्वभाषास्वेकरूपाऽनेकशः प्रतिबिम्बिता
सर्वलोकराधिता सर्वत्र या सम्मानिता।
वैदिकी वा लौकिकी वा श्रुतिमधुरसंवादिनी
सर्वमंगलभावनासम्भावनामनुशासती।।

IJRSSH

जयति संस्कृत भारती।।

*आचार्य भास्कराचार्य त्रिपाठी कृत **'निर्झरिणी'** (निलिम्प काव्य) में संस्कृत भाषा की रक्षा हेतु कवियों से प्रार्थना की गयी है। वे कवियों से पुनः संस्कृत भाषा का गुणगान करने के लिए निवेदन करते हैं, जिस प्रकार पहले नदी के किनारे ऋषियों एवं उनके शिष्यों द्वारा मंत्रों का उच्चारण एक स्वर से किया जाता था किन्तु आधुनिक युग में संस्कृत भाषा के प्रति संवेदना प्रकट की जाए, यह उचित नहीं है। इसलिए संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान हेतु कवियों को संस्कृत भाषा में कृतित्व करना चाहिए। ऐसा वर्णन प्रस्तुत पद्य में अवलोकनीय है–*

पुरा कदाचित् तमसातीरे स्नेहयुता सुरवाणी
युगलविरहमालोक्य पीड़िता त्वामसूत कल्याणी
स सम्प्रत्यपि रोदिति तस्यै संवेदनाबलं देयाः
कविते! पुनः संस्कृतं गेयाः।

*आचार्या नलिनी शुक्ला द्वारा रचित काव्य **'निर्झरिणी'** में संस्कृत भाषा की महत्ता का वर्णन किया गया है कि संस्कृत भाषा की सेवा करने पर जीवन पवित्र हो जाता है। हम सभी संस्कृत भाषा के लिए समर्पित हो जाये तो हमारा जीवन निश्चय ही धन्य हो जाए।*

हम सभी भारतमाता के ऋणी हैं कि देवभाषा के रूप में संस्कृत भाषा प्राप्त हुयी है, जिसकी ख्याति विश्व प्रसिद्ध है। इस पद्य में ऐसा सुन्दर वर्णन द्रष्टव्य है–

संस्कृतस्य सेवया पवित्रमस्तु जीवनम्।
संस्कृतौ समर्पितं सुधन्यमस्तु मे धनम्।।
भारति! त्वया दया तथाविधा विधीयताम्।
देवभारतीसुधा सदा यथा निपीयताम्।।

*डॉ. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि' द्वारा रचित **'निस्यन्दिनी'** गीतसंग्रह में संस्कृत भाषा के स्वरूप का निरूपण किया गया है। संस्कृत भाषा सरल, सरस एवं पठनीय है। जिसको सुनने से हृदय में शान्ति उपस्थित हो जाती है। हमारे देश के प्रसिद्ध वेद, पुराण, ग्रन्थ, यथा– भागवद्गीता, रामायण तथा महाभारत इत्यादि सभी इसी भाषा में लिखे गये हैं। भारतीय दर्शन, षड् वेदांग सभी संस्कृत भाषा का प्रतिनिधित्व करते हैं। महाकवि कालिदास ने जिस प्रकार संस्कृत भाषा का दिव्य स्वरूप प्रकट किया है, उसी प्रकार हम सबको भी संस्कृत भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए, यथा–*

सरलैषा संस्कृतभाषा सदा पठनीया भजनीया सखे।
मथुरैषा संस्कृतभाषा सदा स्मरणीया श्रवणीया सखे।।
गीता वेदाः स्मृतयश्चास्यां रामायणं भारतं चास्याम्

IJRSSH

मुदुलैषा संस्कृतभाषा सदा कमनीया महनीया सखे।।
षट्शास्त्राणि दर्शनान्यस्यां षडंगानि वेदानामस्याम्
रुचिरैषा संस्कृतभाषा सदा ग्रहणीया स्प्रहणीया सखे।।

'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र प्रणीत ***'मृद्वीका'*** *रागकाव्य में* ***'शं तनोतु संस्कृतम्'*** *गीत में संस्कृत भाषा का महत्त्व और उसकी पुनः स्थापना की प्रेरणा दी गई है। कवि संस्कृत भाषा के प्रसार की सर्वत्र कामना करते हैं कि जिसमें उनका शैशवकाल व्यतीत हुआ। जिसमें यौवन विकसित हुआ। ऐसी आर्य भाषा की सदा जय हो। कवि मातृस्तव करते हुए स्वग्रह के मंगल की कामना इस प्रकार करते हैं–*

यस्मिन् शैशवं गतम्
यस्मिन् यौवन वृतम्।
यस्मिन् रागिणी कृता
यस्मिन् कामिनी कृता।।
शोक ताप हारिण
स्तद्गृहस्य मंगलम्।।

'कौमारम्' *बालगीत संकलन में कवि ने बाल बोध हेतु संस्कृत ज्ञानार्थ सरल एवं सरस भाषा में संस्कृत भाषा की वन्दना की है।* ***'विश्व भारती', 'राष्ट्रभारती', 'दिव्यभारती', 'लोकभारती'*** *जैसे शीर्षकों से गीर्वाण वाणी का गुणगान किया है, जो इस प्रकार वर्णित किया गया है–*

विश्वभारती जयतु संस्कृतं
राष्ट्रभारती जयतु संस्कृतम्।
दिव्यभारती जयतु संस्कृतं
लोकभारती जयतु संस्कृतम्।।
भणतु श्रमिको जयतु संस्कृतं
भणतु कार्मिको जयतु संस्कृतम्।
गायतु पथिको जयतु संस्कृतं
गायतु कृषको जयतु संस्कृतम्।।

इस प्रकार अर्वाचीन संस्कृत गीतकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा साहित्य के सामाजिक दायित्व का पूर्ण निर्वहन किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ऋग्वेद : 4/58/3*
2. *वाक्यपदीय–ब्रह्मकाण्ड। भागवत सुधा–करपात्रीजी महाराज, पृ0 106*

IJRSSH

3. *मैत्रीयोपनिषद–6/22*

4. *श्रीमद्भागवत पुराण*

5. *महाभाष्य–पतंजलि 13.9*

6. *बोपदेव व्याकरण*

7. *लघुसिद्धान्त कौमुदी भूमिका भाग–1*

8. *पाणिनीय शिक्षा*

9. *पाणिनीय शिक्षा*

10. *पाणिनीय शिक्षा/अष्टाध्यायी*

11. *सारकौमुदी 8.3.19*

12. *अष्टाध्यायी 6.1.123*

13. *श्वयुवमघोनामतद्धिते 6/4/133*

14. *संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका–डा0 बाबूराम सक्सेना*

IJRSSH